1748

॥ श्रीहरिः ॥

संतानगोपालस्तोत्र

[संतानप्राप्तिके शास्त्रीय उपाय]

पुत्रप्रद पाँच व्रत
संतानगोपालमंत्रविधि
संतानगोपालस्तोत्र
षष्ठीदेवीस्तोत्र

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय — **पृष्ठ-संख्या**

१- **पुत्रप्रद पाँच व्रत** **७**

(१) गो-पूजन ७

(२)अभिलाषाष्टकस्तोत्र ७

(३) पापघट-दान ११

(४) कृष्णव्रत १२

(५) गायत्रीपुरश्चरण १३

२- **संतानगोपालमंत्रविधि** **१४**

(क) प्रथम मंत्रविधि १५

(ख) द्वितीय मंत्रविधि १७

(ग) तृतीय मंत्रविधि [सनत्कुमारोक्त संतानगोपालमंत्र] . १८

(घ) मंत्रसारोक्त संतानकर-यंत्र २०

३- **संतानगोपालस्तोत्र** **२२**

४- **षष्ठीदेवीस्तोत्र** **४१**

निवेदन

'पुन्नामनरकात् त्रायते इति पुत्रः' **नरकसे जो त्राण (रक्षा) करता है, वही पुत्र है। अर्थात् अपने पितरोंके लिये सद्‌गतिका प्रयास करनेवाला पुत्र कहलाता है। अपने शास्त्रोंमें औरस पुत्रकी बड़ी महिमा है। श्राद्ध, तर्पणादि करनेका मुख्य अधिकारी पुत्र ही है—**

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिःपुत्रस्य पुत्रता॥

पिताकी जीवित अवस्थामें उनकी आज्ञाका पालन करना, मृत्युके अनन्तर क्षयाहतिथिमें सुन्दर भोजन कराना तथा गयामें पिण्डदान अर्थात् श्राद्ध करना—ये तीन मुख्य रूपसे पुत्रके कर्तव्य हैं।

प्रत्येक मनुष्यपर मुख्य रूपसे तीन प्रकारके ऋण होते हैं—१-देव-ऋण, २-पितृ-ऋण और ३-मनुष्य (ऋषि)-ऋण। तीनों प्रकारके ऋणसे मुक्त होनेकी विधि शास्त्रोंमें बतायी गयी है। पितृ-ऋणसे मुक्त होनेके लिये गृहस्थ-जीवनमें संतानकी परम्परा आवश्यक है।

संतान होनेसे वंश-परम्परा अक्षुण्ण होती है तथा होनेवाली संततिके द्वारा श्राद्ध, तर्पण आदि पितृकर्म सम्पन्न होनेसे पितृ-ऋणसे मुक्ति मिलती है। यह तो संतानप्राप्तिका आध्यात्मिक पक्ष है। दूसरा लौकिक पक्ष भी है। संसारमें गृहस्थ पुरुषको समस्त सुखोंके रहते हुए भी यदि पुत्रसुख नहीं है तो उसे संसारके समस्त सुखोंमें निःसारता प्रतीत होती है—'अपुत्रस्य गृहं शून्यम्'। **जिसे पुत्र नहीं उसका**

घर सूना होता है, अतः लोकदृष्टि और आध्यात्मिक दृष्टि—दोनों दृष्टियोंसे गृहस्थाश्रमको सुखी बनानेके लिये मनुष्यको सत्पुत्रकी प्राप्ति होनी चाहिये।

सामान्यतः विवाहोपरान्त नवदम्पतीको संतानकी प्राप्ति स्वाभाविक है, परंतु प्रारब्धवशात् कभी-कभी किसी व्यक्तिको ग्रहबाधाके कारण संतान नहीं होती तो पुत्रप्राप्तिके लिये वह व्यक्ति औषधि-उपचारके साथ देवाराधन-अनुष्ठान तथा हरिवंशपुराणके श्रवण आदिका सहारा लेता है, यद्यपि प्रबल प्रारब्धको मिटानेमें कठिनाई होती है, परंतु अधिकतर लोगोंको सफलता मिलती है।

अपने शास्त्र संतानप्राप्तिके लिये मंत्रानुष्ठानकी विधि बताते हैं, इन्हें सावधानीपूर्वक करनेसे सफलता प्राप्त होती है। संतान-प्राप्तिकी कुछ शास्त्रोक्त विधियाँ यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं तथा सनत्कुमारसंहिताके आधारपर संतानगोपालके मंत्रका जप, उसकी विधि तथा स्तोत्रपाठ प्रस्तुत है। इसके साथ ही कुछ दूसरे मंत्र तथा अन्य उपाय भी उपलब्ध हैं, जिन्हें यहाँ प्रस्तुत किया गया है, साथ ही षष्ठीदेवीकी कथा, उनकी पूजाविधि तथा स्तोत्र भी दिया गया है। साधक अपनी रुचिके अनुसार इनका अनुष्ठान कर सकते हैं।

—राधेश्याम खेमका

॥ श्रीहरिः ॥

पुत्रप्रद पाँच व्रत

संतान-प्राप्तिके लिये शास्त्रानुसार पाँच प्रकारके प्रयोग सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

(१) गो-पूजन

किसी सौभाग्यवतीको पुत्र न होता हो तो वह कार्तिक, मार्गशीर्ष या वैशाखके शुक्ल पक्षमें पहले गुरुवारको गो-पूजन प्रारम्भ करे। प्रातःकाल नित्यकृत्यसे निवृत्त होकर अपनी या परायी किसी भी गौको मकानके प्रांगणमें पूर्वाभिमुख खड़ी करके स्वयं उत्तराभिमुख होकर शुद्ध जलसे उसका पादप्रक्षालन करे। फिर उसके ललाटको धोकर मध्यमें रोलीका टीका लगाये और अक्षत चढ़ाये। फिर कुछ भोजन, लड्डू, पेड़ा, बतासा या गुड़ खिलाकर मुँह धो दे। फिर करबद्ध नतमस्तक होकर प्रार्थना करे कि 'हे माता! आप मुझे पुत्र प्रदान करें।' इस प्रकार वर्षभर करना चाहिये।

(२) अभिलाषाष्टकस्तोत्र

ऋषिवर विश्वानरकी धर्मपत्नी शुचिष्मतीने अपने पतिसे प्रार्थना की कि 'मेरे शिव-समान पुत्र हो।' यह सुनकर विश्वानर क्षणभर तो चुप रहे, फिर बोले 'एवमस्तु' और उन्होंने स्वयं ही १२ महीनेतक फलाहार, जलाहार और वाय्वाहारके आधारपर घोर तप किया। फिर काशी जाकर विकरादेवी तथा सिद्धि-विनायकके समीप चन्द्रकूपमें स्नान करके वहीं वीरेश्वरके समीप अभिलाषाष्टकके आठ मंत्रोंसे बड़ी श्रद्धापूर्वक स्तुति की। इससे भगवान् शंकर प्रसन्न हो गये और कुछ ही दिन बाद विश्वानरकी पत्नी शुचिष्मतीको गर्भ रह गया। समय आनेपर उसने शिवसदृश पुत्र गृहपति (अग्नि)-को जन्म दिया। अतः संतानकी कामनावाले पति या पत्नीको चाहिये

कि प्रातः शौच-स्नानादिसे निवृत्त हो शिवजीका पूजन करे और इस स्तोत्रका आठ या अट्ठाईस बार पाठ करे। इस प्रकार एक वर्षपर्यन्त पाठ करते रहनेसे पुत्रकी प्राप्ति होती है। मूल स्तोत्र इस प्रकार है—

स्तोत्र

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं
सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किञ्चित्।
एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे
तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम्॥ १॥
एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो
नाना रूपेष्वेकरूपोऽस्यरूपः।
यद्वत्प्रत्यस्वर्क एकोऽप्यनेक-
स्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये॥ २॥
रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रूप्यं
नैरः पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ।

यहाँ सब कुछ एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म ही है। यह बात सत्य है, सत्य है। इस विश्वमें भेद या नानात्व कुछ भी नहीं है। इसलिये एक अद्वितीयरूप आप महेश्वरकी मैं शरण लेता हूँ॥ १॥

शम्भो! आप रूपरहित अथवा एकरूप होकर भी जगत्के नाना स्वरूपोंमें अनेककी भाँति प्रतीत होते हैं। ठीक उसी तरह, जैसे जलके भिन्न-भिन्न पात्रोंमें एक ही सूर्य अनेकवत् दृष्टिगोचर होता है। अतः आपके सिवा और किसी स्वामीकी मैं शरण नहीं लेता॥ २॥

जैसे रज्जुका ज्ञान हो जानेपर सर्पका भ्रम मिट जाता है, सीपीका बोध होते ही चाँदीकी प्रतीति नष्ट हो जाती है तथा मृगमरीचिकाका

यद्वत्तद्वद् विश्वगेष प्रपञ्चो
यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम्॥ ३॥
तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ
तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः।
पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पि-
र्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये॥ ४॥
शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रे-
रघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात्।
व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः
कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये॥ ५॥
नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद
नो वा विष्णुर्नो विधाताखिलस्य।

निश्चय होनेपर उसमें प्रतीत होनेवाला जलप्रवाह असत्य सिद्ध हो जाता है, उसी प्रकार जिनका ज्ञान होनेपर सब ओर प्रतीत होनेवाला यह सम्पूर्ण प्रपंच उन्हींमें विलीन हो जाता है, उन महेश्वरकी मैं शरण लेता हूँ॥ ३॥

शम्भो! जैसे जलमें शीतलता, अग्निमें दाहकता, सूर्यमें ताप, चन्द्रमामें आह्लाद, पुष्पमें सुगन्ध तथा दूधमें घी स्थित है, उसी प्रकार सम्पूर्ण विश्वमें आप व्याप्त हैं, इसलिये मैं आपकी शरण लेता हूँ॥ ४॥

आप बिना कानके ही शब्दको सुनते हैं, नासिकाके बिना ही सूँघते हैं, पैरोंके बिना ही दूरसे चले आते हैं, नेत्रोंके बिना ही देखते और रसनाके बिना ही रसका अनुभव करते हैं, आपको यथार्थ-रूपसे कौन जानता है? अतः मैं आपकी ही शरण लेता हूँ॥ ५॥

ईश! वेद भी आपके साक्षात् स्वरूपको नहीं जानता, भगवान् विष्णु, सबके स्रष्टा ब्रह्मा भी आपको नहीं जानते,

नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा
भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये॥ ६ ॥
नो ते गोत्रं नेश जन्मापि नाख्या
नो वा रूपं नैव शीलं न देशः।
इत्थंभूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः
सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजे त्वाम्॥ ७ ॥
त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे
त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः।
त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बाल-
स्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि॥ ८ ॥*

बड़े-बड़े योगीश्वर तथा इन्द्र आदि देवता भी आपको यथार्थरूपसे नहीं जानते, परंतु आपका भक्त आपकी ही कृपासे आपको जानता है, अतः मैं आपकी ही शरण लेता हूँ॥ ६॥

ईश! आपका न कोई गोत्र है, न जन्म है, न नाम है, न रूप है, न शील है और न कोई स्थान ही है, ऐसे होते हुए भी आप तीनों लोकोंके स्वामी हैं और सभी मनोरथोंको पूर्ण करते हैं, इसीलिये मैं आपकी आराधना करता हूँ॥ ७॥

कामारे! आपसे ही सब कुछ है, आप ही सब कुछ हैं, आप ही पार्वतीपति हैं, आप ही दिगम्बर हैं और अति शान्तस्वरूप हैं, आप ही वृद्ध हैं, आप ही तरुण हैं और आप ही बालक हैं। कौन-सा ऐसा तत्त्व है, जो आप नहीं हैं, सब कुछ आप ही हैं, अतः मैं आपके चरणोंमें मस्तक नवाता हूँ॥ ८॥

* स्कन्दपुराण, काशीखंड, पूर्वार्ध अ० १०

(३) पापघट-दान

किसी पातक, उपपातक या महापातकके प्रभावसे पुत्र नहीं हुआ हो तो दम्पतीको चाहिये कि वे किसी तीर्थपर जाकर किसी शुभ दिनमें पापघट-दान करें। यथासामर्थ्य सोने, चाँदी या ताँबेके कलशका अग्न्युत्तारणकर पंचगव्यादिसे शुद्ध करे। साथ ही किसी ऐसे दूरस्थ ब्राह्मणको बुलायें, जो दान लेकर चले जानेपर फिर कभी देखनेमें न आये। इसके पूर्वदिन दोनों स्त्री-पुरुष एक बार भोजनकर ब्रह्मचर्यका पालन करें। फिर दूसरे दिन शौच-स्नानादिसे निवृत्त होकर शुद्ध स्थानमें पूर्वाभिमुख बैठें। सामने किसी चौकी या वेदीपर लाल वस्त्र बिछाकर उसपर अक्षतसे अष्टदल कमल बनायें। फिर उसपर यथाविधि कलश-स्थापन कर उसमें घी या शक्कर भरकर आम्रपल्लव अथवा अशोकादि पत्रोंसे सुशोभित कर उसके ऊपर पूर्णपात्र स्थापित करें। उसके मध्यभागमें सुवर्णनिर्मित विष्णुमूर्ति और उसके समीप ही फणाकृति नागमूर्ति स्थापित करें। प्रांगणके मध्यभागमें स्थंडिलके ऊपर पंचभू-संस्कारपूर्वक अग्नि-स्थापन करें। गणपतिपूजन, नांदीश्राद्ध, पुण्याहवाचन एवं ग्रहस्थापन कर सबका पूजन करें। फिर भगवान् विष्णुकी षोडशोपचारपूजा करके नागकी पंचोपचारसे पूजा करें। फिर कुशकण्डिका करके विष्णुमंत्रसे घीकी १००८ या १०८ आहुतियाँ दें और पूर्वोक्त ब्राह्मणका पूजनकर उसे भोजन करायें। इसी समय **'मनसा दुर्विनीतेन०'*** आदि मंत्रोंको पढ़ते

---

* मनसा दुर्विनीतेन यन्मया पातकं कृतम्।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः॥ १ ॥
व्रजता तिष्ठता वापि कर्मणा यदुपार्जितम्। तत्तिष्ठतु०॥ २ ॥
परस्वहरणेनापि पातकं यदुपार्जितम्। तत्तिष्ठतु०॥ ३ ॥

हुए प्रति मंत्र अक्षत या दूब कलशपर चढ़ाता जाय। मंत्र समाप्त हो जानेपर हाथमें जल, फल, चन्दन, अक्षत-पुष्पादि लेकर देश-कालादिका कीर्तनकर '**अमुकोऽहं मत्कर्तृकानेकजन्मार्जित-ज्ञाताज्ञातवाङ्मनःकायकृतमहापातकोपपातकादिपूरितमिमं घटं गन्धपुष्पाद्यर्चितं तुभ्यं सम्प्रददे।**' इस प्रकार संकल्पकर ब्राह्मणके हाथमें संकल्प छोड़ दें। साथ ही थोड़ा सुवर्ण देकर उस कलशको दोनों हाथोंसे उठाकर ब्राह्मणको दें और हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करें—

महीसुर द्विजश्रेष्ठ जगतस्तापहारक।
त्राहि मां दुःखसंतप्तं त्रिभिस्तापैः सदार्दितम्॥
संसारकूपतस्त्वं मां समुद्धर नमोऽस्तु ते।
त्वदन्यो नास्ति मां देव समुद्धर्तुं क्षमः क्षितौ॥

इस प्रकार प्रार्थनाकर विसर्जन करें। फिर आचार्यको दक्षिणा देकर भोजन करायें। तदनन्तर दम्पती स्वयं भोजन करें।

(४) कृष्णव्रत

प्रौढ़ावस्थामें भी पुत्र न हो तो यज्ञोपवीत धारण करके

सुवर्णस्तेयजं पापं मनोवाक्कायकर्मजम्। तत्तिष्ठतु०॥ ४ ॥
रसविक्रयतः पापं ब्रह्मजन्मनि सञ्चितम्। तत्तिष्ठतु०॥ ५ ॥
क्षात्रधर्मविहीनेन क्षात्रजन्मनि यत्कृतम्। तत्तिष्ठतु०॥ ६ ॥
वैश्यजन्मन्यपि मया तथा यत्पातकं कृतम्। तत्तिष्ठतु०॥ ७ ॥
शूद्रजन्मनि यत्पापं सततं समुपार्जितम्। तत्तिष्ठतु०॥ ८ ॥
गुरुदाराभिगमनात् पातकं यन्मयार्जितम्। तत्तिष्ठतु०॥ ९ ॥
अपेयपानसम्भूतं पातकं यन्मयार्जितम्। तत्तिष्ठतु०॥ १० ॥
वापीकूपतडागानां भेदनेन कृतं च यत्। तत्तिष्ठतु०॥ ११ ॥
अभक्ष्यभक्षणेनैव संचितं यत्तु पातकम्। तत्तिष्ठतु०॥ १२ ॥
ज्ञाताज्ञातैरनेकैश्च घटोऽयं सम्भृतो मया।
पूर्वजन्मान्तरोत्पन्नैरेतज्जन्मकृतैरपि ॥ १३ ॥

श्रीकृष्ण या गणेशके मन्दिरमें अथवा गोशाला या पीपल, गूलर या कदम्ब-वृक्षके नीचे बैठकर कमल, कदम्ब या तुलसीकी मालापर—'**देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥**' इस मंत्रका प्रतिदिन पाँच हजार, ढाई हजार या एक सहस्र जप करे। इस प्रकार एक लाख जप पूरा हो जानेपर दशांश हवन, तर्पण, मार्जनकर ब्राह्मणोंको खीर, मालपूआ, पूड़ीका भोजन कराये। ऐसा करनेसे श्रीकृष्णकी कृपासे पुत्र प्राप्त होता है।

(५) गायत्रीपुरश्चरण

किसी निश्चित शुभ मुहूर्तमें प्रारम्भ करे। इसके एक दिन पूर्व उपवासपूर्वक क्षौराचरणकर दशविधस्नान* करे। दूसरे दिन देवमन्दिर या बिल्ववृक्षके नीचे भगवान् सूर्यके स्वरूपका चिन्तन करता हुआ रुद्राक्षकी मालासे प्रतिदिन पाँच सहस्र या एक सहस्र गायत्रीका जप करे। साथ ही गोघृतसे दशांश हवन भी करता जाय। जपके बाद प्रतिदिन जौकी रोटी और मूँगकी दाल बनाकर भोजन करे। अन्न स्वकीय ही होना चाहिये। चौबीस लाख जप पूरा हो जानेपर पुरश्चरण सम्पूर्ण होता है। यह पुरश्चरण यदि निर्विघ्न समाप्त हो जाय; तो व्रतकर्ताको धन, धान्य, प्रतिष्ठा, पुत्रादिकी प्राप्ति होती है।

---

* गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। भस्ममृन्मधुवारीणि मन्त्रतस्तानि वै दश॥
(निर्णयसिन्धु तृ० परि० उत्त०)

दशविध स्नान इस प्रकार हैं—१. गोमूत्रस्नान, २. गोमयस्नान, ३. दुग्धस्नान, ४. दधिस्नान, ५. घृतस्नान, ६. कुशोदक-स्नान, ७. भस्मस्नान, ८. मृत्तिकास्नान, ९. मधुस्नान तथा १०. जलस्नान।

संतानगोपालमंत्रविधि

। श्रीगणेशाय नमः ।

संतानगोपाल-मंत्रानुष्ठानके लिये प्रायः तीन मंत्र उपलब्ध हैं। यहाँ तीनों मंत्रोंको विधिसहित लिखा जा रहा है। अपनी रुचिके अनुसार इनमेंसे किसी एक मंत्रका अनुष्ठान करके संतानगोपालस्तोत्रका यथाविधि पाठ करना चाहिये।

स्नानादिसे निवृत्त होकर शुद्ध आसनपर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर शिखाबन्धन, आचमन, प्राणायाम आदि करके निम्नलिखित मंत्रसे भगवान् गणेशजीका स्मरण करना चाहिये—

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

तदनन्तर निम्न संकल्प करना चाहिये—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्या-वर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे ....स्थाने ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोऽहम् अस्यामेव जन्मनि अस्यामेव पाणिग्रहीत्यां धर्मपत्न्यां भगवद्भक्तस्य सदाचारनिष्ठस्य सनातनधर्मनिरतस्य चिरञ्जी-

विनः वंशप्रवर्तकस्य स्वात्मजस्योत्पत्त्यर्थं वंशानुवृध्यर्थं सन्ततिप्रतिबन्धकग्रहजन्यदोषनिवृत्तिपूर्वकं श्रीराधामाधव-प्रीत्यर्थं च सन्तानगोपालमन्त्रस्य जपं सन्तानगोपालस्तोत्र-पाठञ्च करिष्ये।

संकल्पके अनन्तर यथाविधि जप तथा स्तोत्रपाठ करना चाहिये।

(क) प्रथम मंत्रविधि

विनियोग

निम्नांकित वाक्य पढ़कर विनियोग करे—

अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास

‘देवकीसुत गोविन्द’ हृदयाय नमः (इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथकी मध्यमा, अनामिका और तर्जनी अंगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे)। **‘वासुदेव जगत्पते’ शिरसे स्वाहा** (इस वाक्यको बोलकर सिरका स्पर्श करे)। **‘देहि मे तनयं कृष्ण’ शिखायै वषट्** (इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथके अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे)। **‘त्वामहं शरणं गतः’ कवचाय हुम्** (इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथकी पाँचों अंगुलियोंसे बायीं भुजाका और बायें हाथकी पाँचों अंगुलियोंसे दाहिनी भुजाका स्पर्श करे)। **‘ॐ नमः’ अस्त्राय फट्** (इस वाक्यको बोलकर दाहिने हाथको सिरके ऊपरसे बायीं ओरसे पीछेकी ओर ले जाकर दाहिनी ओरसे आगेकी ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियोंसे बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजाये)।

इसके पश्चात् निम्नांकित रूपसे भगवान् श्रीकृष्णका ध्यान करे—

वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्।
किरीटिसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम्॥
आदाय तं जलस्थं च गुरवे वैदिकाय च।
अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्॥

'पार्थसारथि अच्युत भगवान् श्रीकृष्ण करुणाके सागर हैं। वे जलमें डूबे हुए गुरु-पुत्रको लेकर आ रहे हैं। वे वैकुण्ठसे अभी-अभी पधारे हैं और रथपर विराजमान हैं। अपने वैदिक गुरु सांदीपनिको उनका पुत्र अर्पित कर रहे हैं—साधक पुत्रकी प्राप्तिके लिये इस रूपमें महाभाग भगवान् श्रीकृष्णका चिन्तन करे।'

मूल मंत्र

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥'

यह सम्पूर्ण मंत्र है। इसका तीन लाख जप करना चाहिये।

इस मंत्रका भावार्थ इस प्रकार है—सच्चिदानन्दस्वरूप, ऐश्वर्यशाली, शक्तिशाली, कामनापूरक, सौम्यस्वरूप, देवकीनन्दन! गोविन्द! वासुदेव! जगत्पते! श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरणमें आया हूँ, आप मुझे पुत्र प्रदान कीजिये।

(ख) द्वितीय मंत्रविधि

विनियोग

अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, क्लीं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास

ग्लौं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। श्रीं कवचाय हुम्। ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यान

शङ्खचक्रगदापद्मं दधानं सूतिकागृहे।
अङ्के शयानं देवक्याः कृष्णं वन्दे विमुक्तये॥

जो सूतिकागृहमें शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये माता देवकीकी गोदमें सो रहे हैं, उन भगवान् श्रीकृष्णकी मैं संतानप्राप्तिके प्रतिबन्धकसे मुक्त होनेके लिये वन्दना करता हूँ।

मूल मंत्र इस प्रकार है—

'**ॐ नमो भगवते जगदात्मसूतये नमः**' (सम्पूर्ण जगत् जिनकी अपनी संतान है, उन भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार है)।

इसका तीन लाख जप करना चाहिये।

(ग) तृतीय मंत्रविधि [सनत्कुमारोक्त संतानगोपालमंत्र]

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अंगन्यास

इस मंत्रका अंगन्यास ठीक वैसा ही है, जैसा कि द्वितीय मंत्रका है। अथवा इस प्रकार न्यास करें—

'देवकीसुत गोविन्द' हृदयाय नमः। 'वासुदेव जगत्पते' शिरसे स्वाहा। 'देहि मे तनयं कृष्ण' शिखायै वषट्। 'त्वामहं शरणं गतः' कवचाय हुम्। 'देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥' अस्त्राय फट्।

ध्यान

शङ्खचक्रगदापद्मं धारयन्तं जनार्दनम्।
अङ्के शयानं देवक्याः सूतिकामन्दिरे शुभे॥
एवं रूपं सदा कृष्णं सुतार्थं भावयेत् सुधीः॥

'उत्तम बुद्धिवाला साधक पुत्रकी प्राप्तिके लिये सदा ऐसे रूपवाले जनार्दन भगवान् श्रीकृष्णका चिन्तन करे, जो मंगलमय सूतिकागारमें शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये देवकीके अंकमें शयन करते हैं।'

सम्पूर्ण मंत्र इस प्रकार है—

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

इस मंत्रका तीन लाख जप करे।

शुक्ल पक्षकी दशमी तिथिको आधी रातके समय भगवान् श्रीकृष्णकी पूजा करे। पूजाके लिये स्वस्तिककी रचना करके उसपर घीसे भरा हुआ सकोरा या कोसा स्थापित करे। फिर उसमें रूईकी बत्ती डालकर उत्तम दीप प्रज्वलित करे। तत्पश्चात् अष्टदल कमल बनाकर उसमें स्थापित हुए श्रीकृष्णकी पूजा करे। फिर दो कलशोंको जलसे भरकर उनकी विधिवत् स्थापना करके सम्पूर्ण उपचारोंसे युक्त पूजा करे। तत्पश्चात् उन कलशोंमें भक्तिपूर्वक भगवान् श्रीकृष्णका आवाहन करके पुनः उनका पूर्वोक्त रीतिसे पूजन करे। तदनन्तर उन दोनों कलशोंका स्पर्श करके अनन्यभावसे एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ बार उपर्युक्त मंत्रका जप करे। इसके बाद द्वादशीको गोविन्दकी विधिपूर्वक पूजा करके अगहनीके चावलकी स्वादिष्ठ खीर तथा गायके घी और गुड़से युक्त पकवानका भोग अर्पण करे। इन सबके साथ सामयिक फल भी होना चाहिये। इसके अतिरिक्त दाल, भात, स्वादिष्ठ सुस्निग्ध व्यंजन, कपिला गायके दूधका दही और खाँड भी रहना चाहिये। इन समस्त भोज्य पदार्थोंको सोनेके पात्रमें रखकर इनके पात्रभूत भगवान् विष्णुको इन्हें निवेदन करे। साथ ही शीतल कर्पूर और गुलाबसे सुवासित तथा कपड़ेसे छाना हुआ स्वच्छ जल अर्पण करे।

इसके बाद अपनी आर्थिक शक्तिके अनुसार शुद्धबुद्धिसे भगवान् श्रीकृष्णमें श्रद्धा रखते हुए अपनी सम्पूर्ण कामनाओंकी पूर्तिके लिये ब्राह्मणोंको भोजन दे। संस्कारयुक्त अग्निमें भगवान् विष्णुका आवाहन करके अर्घ्य आदिसे उनका पूजन करे। फिर १०८ बार या २८ बार हविष्य (खीर)-की आहुति देकर शेष हविष्यको कहीं सुरक्षित रख दे। इसके बाद घीकी ८०० आहुतियाँ दे। हुतशेष घृतको उक्त दोनों कलशोंमें गिराकर उस घृतमिश्रित जलद्वारा दम्पती (यजमान और उसकी पत्नी दोनों)-का अभिषेक करे। तदनन्तर जलमय श्रीहरिका ध्यान करते हुए ब्राह्मण पुनः उन कलशोंके जलसे उन दोनोंका अभिषेक करके

एक सौ आठ बार पूर्वोक्त मंत्रका जप करनेके पश्चात् शेष रखे हुए हविष्यको यजमान-पत्नीके हाथमें दे दे।

यजमान-पत्नी उस हविष्यको लेकर श्रीकृष्णका ध्यान करती हुई एक सुखद आसनपर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय और उसका भक्षण करे; उस समय यह भावना करे कि इस हविष्यके साथ भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं मेरे उदरमें आकर विराजमान हुए हैं। फिर जब श्रेष्ठ ब्राह्मणलोग अच्छी तरह भोजन कर लें, तब यजमान पान और मोदक आदिसे उन्हें तृप्त करे। तत्पश्चात् वह श्रीविष्णुके चिन्तन-पूर्वक उन ब्राह्मणोंके चरणोंमें मस्तक झुकाये। उस समय ब्राह्मणलोग यजमान-दम्पतीसे यह कहें कि 'आप दोनोंके अभीष्ट मनोरथकी सिद्धि हो।' फिर वे निष्पाप दम्पती यह भावना करते हुए कि 'अब हमारा मनोरथ सफल हो गया' अत्यन्त प्रसन्न हो स्वयं भी भोजन करें।

जो ब्राह्मण धन खर्च करनेमें कंजूसी न करके शुक्ल पक्षकी द्वादशी तिथिको भगवान् विष्णुके प्रति भक्तिभावसे युक्त हो इस प्रकार पूजन आदि करता है, वह शीघ्र ही तेजस्वी एवं चिरायु पुत्र प्राप्त कर लेता है। उसका वह पुत्र भी वंशपरम्पराको चलानेवाला, विष्णुभक्त एवं परम बुद्धिमान् होता है।

जो श्रेष्ठ द्विज दरिद्र होनेके कारण ऐसा न कर सके, वह यदि पूर्वोक्त मंत्रका जप एवं तर्पण करे तो उसे भी पुत्र प्राप्त हो सकता है।

(घ) मंत्रसारोक्त संतानकर-यंत्र

पहले अष्टदल कमल बनाकर उसकी कर्णिकामें '**क्लीं**' इस कामबीजका उल्लेख करे। फिर वहीं यजमान पति-पत्नीके नाम और उसकी कामना भी लिख दे। यथा—'**अमुकस्य धर्मपत्न्याः अमुकदेव्याः पुत्रं कुरु कुरु**।' फिर आठ दलोंके निम्न भागोंमें दो-दो करके अकारादि सोलह स्वरोंको अंकित

करे तथा उन्हींके ऊपरी भागोंमें संतानगोपाल-मंत्रके चार-चार अक्षरोंको लिखे। फिर उन दलोंके बाह्य भागमें एक गोल रेखा खींचकर उसे ककारादि वर्णोंसे आवेष्टित करे। तत्पश्चात् उस वृत्तके बाहर चतुष्कोण बनावे। किसी पात्रमें माखन रखकर उसपर यह यंत्र अंकित करे अथवा सूक्ष्म स्वर्ण आदिके पत्रपर इस यंत्रको लिखे। यंत्रसे अंकित नवनीतको नारी खा जाय और स्वर्णादि पत्रोंपर लिखे हुए यंत्रको वह धारण करे। इससे वह पुत्रको जन्म देती है।

अमुक नाम
देव्याः पुत्रं
क्लीं कुरु कुरु
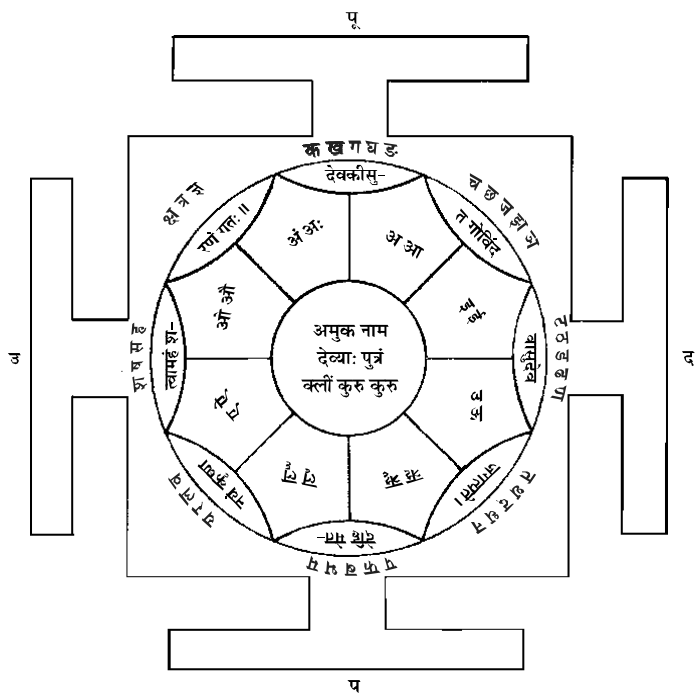
(शारदातिलकमें बताये अनुसार यह संतान-गोपालके मंत्रकी अनुष्ठानविधि यहाँ दी गयी है।)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

संतानगोपालस्तोत्र

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम्।१।
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्।२।
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा।३।
गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्।
पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम्।४।

मैं पुत्रकी प्राप्तिके लिये लक्ष्मीपति, कमलनयन, देवकीनन्दन तथा सर्वपापहारी, मधुसूदन, श्रीकृष्णको नमस्कार करता हूँ॥ १॥ मैं पुत्रप्राप्तिके उद्देश्यसे उन वासुदेव श्रीहरिको प्रणाम करता हूँ, जो यशोदाके अंकमें बालगोपालरूपसे विराजमान हैं और नन्दको आनन्द दे रहे हैं॥ २॥ अपनेको पुत्रकी प्राप्तिके लिये मैं मुनिवन्दित वसुदेवदेवकीनन्दन गोविन्दको सदा नमस्कार करता हूँ॥ ३॥ मैं पुत्र पानेकी कामनासे उन यदुकुलतिलक श्रीकृष्णको नमस्कार करता हूँ, जो साक्षात् कमलापति अच्युत (विष्णु) होकर भी गोपबालकरूपसे गौओंकी रक्षामें लगे हुए हैं॥ ४॥

पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम्।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम।५।

पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते।६।

यशोदाङ्कगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम्।७।

श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन।८।

भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्ष शुभप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।९।

मुझे पुत्रकी प्राप्ति हो, इसके लिये मैं पुत्रेष्टियज्ञका फल देनेवाले कमलनयन लक्ष्मीपति देवकीनन्दन श्रीकृष्णकी वन्दना करता हूँ॥ ५॥ पद्मापते! कमलनयन! पद्मनाभ! जनार्दन! श्रीश! वासुदेव! जगत्पते! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ६॥ यशोदाके अंकमें बालरूपसे विराजमान तथा अपनी महिमासे कभी च्युत न होनेवाले मुनिवन्दित लक्ष्मीपति गोविन्दको मैं प्रणाम करता हूँ। ऐसा करनेसे मुझे पुत्रकी प्राप्ति हो॥ ७॥ श्रीपते! देवदेवेश्वर! दीन-दुःखियोंकी पीड़ा दूर करनेवाले अच्युत! गोविन्द! मुझे पुत्र दीजिये। जनार्दन! मैं आपको प्रणाम करता हूँ॥ ८॥ भक्तोंकी कामना पूर्ण करनेवाले गोविन्द! भक्तकी रक्षा कीजिये। शुभदायक! रुक्मिणीवल्लभ! प्रभो! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ९॥

रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा।
भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः।१०।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।११।

वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।१२।

कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।१३।

लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।१४।

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते।१५।

रुक्मिणीनाथ! सर्वेश्वर! मुझे सदाके लिये पुत्र दीजिये। भक्तोंकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये कल्पवृक्षस्वरूप कमलनयन श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ १०॥ देवकीपुत्र! गोविन्द! वासुदेव! जगन्नाथ! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ११॥ विश्ववन्द्य वासुदेव! लक्ष्मीपते! पुरुषोत्तम! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ १२॥ कमलनयन! कमलाकान्त! दूसरोंपर दया करनेवालोंमें सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ १३॥ लक्ष्मीपते! पद्मनाभ! मुनिवन्दित मुकुन्द! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ १४॥

आप कार्य-कारणरूप, सुखदायक एवं विद्वान् हैं। मैं पुत्रकी प्राप्तिके लिये आप वासुदेवको सदा नमस्कार करता हूँ॥ १५॥

राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे।१६।

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते।१७।

श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।१८।

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित।१९।

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो।२०।

राजीवनेत्र (कमलनयन)! रावणारे (रावणके शत्रु)! हरे! कवे (विद्वन्)! देवेश्वर! विष्णो! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ १६॥ जगदीश्वर! मैं अपने लिये पुत्र-प्राप्तिके उद्देश्यसे आपकी आराधना करता हूँ। रमावल्लभ! वासुदेव! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥ १७॥ मानिनी श्रीराधाके मानका अपहरण करनेवाले तथा अपनी आराधना करनेवाली गोपांगनाओंके वस्त्रको यमुनातटसे हटानेवाले (उन्हें सुख प्रदान करनेवाले) जगन्नाथ! वासुदेव! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥ १८॥ यदुनन्दन! रमापते! वासुदेव! मुनिवन्दित मुकुन्द! हमें पुत्रकी प्राप्ति कराइये॥ १९॥ वासुदेव! मुझे बेटा दीजिये। माधव! मुझे तनय (संतान) दीजिये। श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। महाप्रभो! मुझे वत्स (बच्चा) दीजिये॥ २०॥

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन।२१।

नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।
कमलानाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित।२२।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे।२३।

यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम्।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा।२४।

नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते।२५।

श्रीकृष्ण! मुझे डिंभक (पुत्र) दीजिये। रघुनन्दन! मुझे आत्मज (औरस पुत्र) दीजिये। भक्तोंकी अभिलाषा पूर्ण करनेके लिये कल्पवृक्षस्वरूप नन्दनन्दन! मुझे तनय दीजिये॥ २१॥ श्रीकृष्ण! वासुदेव! जगत्पते! कमलानाथ! गोविन्द! मुनिवन्दित मुकुन्द! मुझे आनन्ददायक पुत्र प्रदान कीजिये॥ २२॥ प्रभो! यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो दूसरा कोई मुझे शरण देनेवाला नहीं है। आप ही मेरे शरणदाता हैं। मुझे पुत्र दीजिये। सम्पत्ति दीजिये। सम्पत्ति और पुत्र दोनों प्रदान कीजिये॥ २३॥ यशोदाजीके स्तनोंके दुग्धपानके रसको जाननेवाले और उनका स्तनपान करनेवाले, भूरे नेत्रोंसे सुशोभित यदुनन्दन श्रीकृष्णकी मैं सदा वन्दना करता हूँ। इससे मुझे पुत्रकी प्राप्ति हो॥ २४॥ देवेश्वर! नन्दनन्दन! प्रभो! मुझे आनन्ददायक पुत्र दीजिये। रमापते! वासुदेव! जगन्नाथ! मुझे धन और पुत्र दीजिये॥ २५॥

पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते। २६।

गोपालडिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते। २७।

मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन। २८

याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसम्पदम्।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो। २९।

आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन। ३०।

माधव! पुत्र और धन (दीजिये), धन और पुत्र (दीजिये), मुझे पुत्र प्रदान कीजिये। श्रीपते! हमारे दीनतापूर्ण वचनपर ध्यान दीजिये॥ २६॥ गोपकुमार गोविन्द! रमावल्लभ वासुदेव! जगन्नाथ! मुझे पुत्र दीजिये, सम्पत्ति दीजिये॥ २७॥ देवकीनन्दन! अच्युत! मुझे मनोवांछित फल (पुत्र) दीजिये। यदुनन्दन! मेरी पुत्रविषयक प्रार्थनाको सफल एवं धन्य कीजिये॥ २८॥ भक्तोंके लिये चिन्तामणिस्वरूप राम! भक्तवांछाकल्पतरो! महाप्रभो! मैं आपसे धन और पुत्रकी याचना करता हूँ। मुझे पुत्र और धन-सम्पत्ति दीजिये॥ २९॥

रघुनन्दन! आप सदा मुझे आनन्ददायक आत्मज, पुत्र, कुमार, डिंभक (बालक), सुत, अर्भक (बच्चा) एवं तनय (बेटा) दीजिये॥ ३०॥

वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम्।
अस्माकं पुत्रसम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम्। ३१।

ॐकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम्।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम्। ३२।

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो। ३३।

राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा। ३४।

अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव। ३५।

मैं अपने लिये पुत्रकी प्राप्तिके उद्देश्यसे संतानप्रद गोपाल, माधव, भक्तोंका मनोरथ पूर्ण करनेवाले अच्युत गोविन्दकी वन्दना करता हूँ॥ ३१॥ ॐकारयुक्त गोपाल, श्रीयुक्त यदुनन्दन तथा क्लींयुक्त देवकीपुत्र यदुनाथको मैं प्रणाम करता हूँ (अर्थात् '**ॐ श्रीं क्लीं**' इन तीनों बीजोंसे युक्त '**देवकीसुत गोविन्द......**' इत्यादि मन्त्रका मैं आश्रय लेता हूँ)॥ ३२॥ वासुदेव! मुकुन्द! ईश्वर! गोविन्द! माधव! अच्युत! श्रीकृष्ण! रमानाथ! महाप्रभो! मुझे पुत्र दीजिये॥ ३३॥ राजीवनयन (कमल-सदृश नेत्रवाले)! गोविन्द! कपिलाक्ष! हरे! प्रभो! सम्पूर्ण कमनीय मनोरथोंकी सिद्धिके लिये वर देनेवाले श्रीकृष्ण! मुझे सदाके लिये पुत्र दीजिये॥ ३४॥ नीलकमलसमूहके समान श्यामसुन्दर रूपवाले जगन्नाथ! रमानायक! माधव! मुझे जलज—कमलके सदृश मनोहर एवं श्रेष्ठ सत्पुत्र प्रदान कीजिये॥ ३५॥

नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो। ३६।
दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम्। ३७।
यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक। ३८।
अस्माकं वाञ्छितं देहि देहि पुत्रं रमापते।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते। ३९।
रमाहृदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो। ४०।
चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते। ४१।

अजगर और वरुणके दूतोंसे नन्दजीकी रक्षा करनेवाले! पृथ्वीपालक! यदुनन्दन! गोविन्द! प्रभो! रुक्मिणीवल्लभ श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ३६॥ अपने सेवकोंकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये कल्पवृक्षस्वरूप! गोविन्द! मुकुन्द! माधव! अच्युत! गोपाल! पुण्डरीकाक्ष (कमलनयन)! मुझे संतान और सम्पत्ति दीजिये॥ ३७॥ यदुनायक! लक्ष्मीपते! यशोदानन्दन! श्रीधर! प्राणवल्लभ! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ३८॥ रमापते! भगवन्! सर्वेश्वर! वासुदेव! जगत्पते! श्रीकृष्ण! हमें मनोवांछित वस्तु दीजिये। पुत्र प्रदान कीजिये॥ ३९॥ रमा (लक्ष्मी)-को अपने वक्षःस्थलमें धारण करनेवाले! सत्यभामाके हृदयवल्लभ! तथा रुक्मिणीके प्राणनाथ! प्रभो! मुझे पुत्र दीजिये॥ ४०॥ चन्द्रमा और सूर्यरूप नेत्र धारण करनेवाले गोविन्द! कमलनयन! माधव! देव! जगदीश्वर! हमें भाग्यशाली श्रेष्ठ पुत्र प्रदान कीजिये॥ ४१॥

कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन।४२।
देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा।४३।
भक्तमन्दार गम्भीर शङ्कराच्युत माधव।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते।४४।
श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो।४५।
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो।४६।
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।४७।

करुणामय! कमलनयन! पद्मनाभ श्रीविष्णुसे सम्मानित देवकीनन्दनन्दन श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥ ४२॥ देवकीपुत्र! श्रीनाथ! वासुदेव! जगत्पते! समस्त मनोवांछित फलोंको देनेवाले श्रीकृष्ण! मुझे सदा पुत्र दीजिये॥ ४३॥ भक्तवांछाकल्पतरो! गंभीर स्वभाववाले कल्याणकारी अच्युत! माधव! ग्वाल-बालोंपर स्नेह करनेवाले श्रीपते! मुझे पुत्र दीजिये॥ ४४॥

श्रीकान्त! वसुदेवनन्दन! ईश्वर! देवकीके प्रिय पुत्र! भक्तोंके लिये कल्पवृक्षरूप! जगत्प्रभो! मुझे पुत्र दीजिये॥ ४५॥

जगन्नाथ! रमानाथ! पृथ्वीनाथ! दयानिधे! वासुदेव! ईश्वर! सर्वेश्वर! प्रभो! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ४६॥

श्रीनाथ! कमलदललोचन! वासुदेव! जगत्पते! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ४७॥

दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः। ४८।

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः। ४९।

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन। ५०।

स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं
विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम्।
स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभि-
र्वन्दे यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम्। ५१।

अपने दासोंके लिये कल्पवृक्ष! गोविन्द! भक्तोंकी इच्छापूर्तिके लिये चिन्तामणि-स्वरूप प्रभो! श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरणमें आया हूँ, मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ४८॥ गोविन्द! पुंडरीकाक्ष! रमानाथ! महाप्रभो! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ४९॥ श्रीनाथ! कमलदललोचन! गोविन्द! मधुसूदन! जनार्दन! मैं अपने लिये पुत्ररूप फलकी सिद्धिके निमित्त आपकी आराधना करता हूँ॥ ५०॥

जो मैया यशोदाके मुखारविन्दकी ओर देखते हुए मन्द मुसकराहटके साथ उनके एक स्तनका दूध पी रहे हैं और दूसरे स्तनका अंगुलियोंसे स्पर्श कर रहे हैं तथा जिनका प्रत्येक अंग उज्ज्वल आभासे प्रकाशित होता है, मैया यशोदाके अंकमें बैठे हुए उन बाल-मुकुन्दकी मैं वन्दना करता हूँ॥ ५१॥

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।५२।
अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित।५३।
वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम।
कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित।५४।
कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दन।
मह्यं च पुत्रसंतानं दातव्यं भवता हरे।५५।
वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत।
देहि मे तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन।५६।
पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव।५७।

कमललोचन! मैं आपसे पुत्र—संततिकी याचना करता हूँ। श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ५२॥ जगत्पते! हमें पुत्रकी प्राप्ति हो, इस उद्देश्यसे हम आपका चिन्तन करते हैं। आप मुझे शीघ्र पुत्र प्रदान कीजिये। मुनिवन्दित श्रीकृष्ण! आपको मुझे अवश्य मेरी प्रार्थित वस्तु—संतान देनी चाहिये॥ ५३॥ वासुदेव! जगन्नाथ! श्रीपते! पुरुषोत्तम! देवेन्द्रपूजित श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र-दान कीजिये॥ ५४॥ यशोदाके प्रिय नन्दन! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये। हरे! आपको मुझे पुत्ररूप संतानका दान अवश्य करना चाहिये॥ ५५॥ वासुदेव! जगन्नाथ! गोविन्द! देवकीकुमार! कौसल्याके प्रिय पुत्र राम! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ५६॥ कमलदललोचन! गोविन्द! विष्णो! वामन! माधव! सीताके प्राणवल्लभ! रघुनन्दन! मुझे पुत्र दीजिये॥ ५७॥

कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा। ५८।

देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन।
सीतानायक कञ्जाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद। ५९।

विभीषणस्य या लङ्का प्रदत्ता * भवता पुरा।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव। ६०।

भवदीयपदाम्भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव। ६१।

राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित। ६२।

कमलनयन श्रीकृष्ण! देवराजसे अलंकृत एवं पूजित हरे! लक्ष्मणके बड़े भैया मुनिवन्दित श्रीराम! मुझे सदाके लिये पुत्र प्रदान कीजिये॥ ५८॥

दशरथके प्रिय नन्दन श्रीराम! सीतापते! कमलनयन! मुचुकुन्दको वर देनेवाले श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥ ५९॥

माधव! आपने पूर्वकालमें जो विभीषणको लंकाका राज्य दिया था, उसी प्रकार हमें पुत्र दीजिये॥ ६०॥

सीताके प्राणवल्लभ रघुनन्दन! मैं आपके चरणारविन्दोंका निरन्तर चिन्तन करता हूँ, मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ६१॥

मुझे मनोवांछित वर और पुत्रोत्पत्तिरूप फल देनेवाले श्रीराम! ब्रह्माजीके द्वारा वन्दित लक्ष्मीपते! आप मुझे पुत्र दीजिये॥ ६२॥

---

* भवता दीयते पुरा इति पाठान्तरम्।

राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे।
भाग्यवत्पुत्रसंतानं दशरथात्मज श्रीपते।६३।
देवकीगर्भसंजात यशोदाप्रियनन्दन।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव।६४।
कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शङ्कर।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक।६५।
गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।६६।

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम्।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः।६७।

लक्ष्मणके बड़े भाई! सीताके प्राणवल्लभ! दशरथकुमार! रघुकुलनन्दन! श्रीराम! श्रीपते! आप मुझे भाग्यशाली पुत्ररूप संतान दीजिये॥६३॥ देवकीके गर्भसे उत्पन्न हुए यशोदाके लाड़ले लाल! गोपाल कृष्ण! राम! माधव! मुझे पुत्र दीजिये॥६४॥ माधव! गोविन्द! वामन! अच्युत! कल्याणकारी श्रीपते! गोपबालकनायक! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥६५॥ गोपकुमार! सबसे बढ़कर धन्य! गोविन्द! अच्युत! माधव! वासुदेव! जगत्पते! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥६६॥

ये भगवान् देवकीनन्दन मुझे पुत्र दें, पुत्र दें। शीघ्र ही भाग्यवान् पुत्रकी प्राप्ति करायें। श्रीसीताके स्वामी! रघुकुलनन्दन श्रीरामचन्द्र! मेरे वंशके विस्तारके लिये मुझे पुत्र प्रदान करें, पुत्र प्रदान करें॥६७॥

दीयतां वासुदेवेन तनयो मत्प्रियः सुतः।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम।६८।
राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक।६९।
वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।७०।
ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।७१।
चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।७२।
विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो।७३।

वसुदेवनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण तथा सीतापति भगवान् श्रीराम सदा मुझे आनन्ददायक कुमारोपम प्रिय पुत्र प्रदान करें॥ ६८॥ राम! राघव! गोविन्द! देवकीपुत्र! माधव! श्रीपते! गोपबालकनायक श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये॥ ६९॥ मधुसूदन! मुझे वंशका विस्तार करनेवाला पुत्र दीजिये! पुत्र दीजिये!! पुत्र दीजिये!!! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ७०॥ कंसारे! माधव! अच्युत! मुझे मनोवांछित पुत्र प्रदान कीजिये! पुत्र दीजिये!! पुत्र दीजिये!!! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ७१॥

माधव! जबतक चन्द्रमा, सूर्य और कल्पकी स्थिति रहे, तबतकके लिये मुझे पुत्रपरम्परा प्रदान कीजिये! पुत्र दीजिये!! पुत्र दीजिये!!! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ७२॥ प्रभो! देवकीनन्दन श्रीकृष्ण! आप सदा मेरे लिये विद्वान्, बुद्धिमान् और धनसम्पन्न पुत्र प्रदान कीजिये॥ ७३॥

नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम्।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम्।।७४।।
भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः।।७५।।
स्वामिंस्त्वं भगवन् राम कृष्ण माधव कामद।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः।।७६।।
तनयं देहि गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।७७।।
पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।७८।।
शङ्खचक्रगदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।७९।।

कमलनयन श्रीकृष्ण! मैं पुत्रकी प्राप्तिके लिये समस्त कामनाओंके दाता आप पुंडरीकाक्ष श्रीकृष्ण मुकुन्द मधुसूदन गोविन्दको प्रणाम करता हूँ॥७४॥ सम्पूर्ण मनोवांछित फलोंके दाता! गोविन्द! स्वामिन्! भगवन्! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥७५॥ स्वामिन्! भगवन्! राम! कृष्ण! कामनाओंके दाता माधव! मुझे सदा पुत्र प्रदान कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥७६॥ गोविन्द! कमलनयन! कमलापते! मुझे पुत्र दीजिये! पुत्र दीजिये!! पुत्र दीजिये!!! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥७७॥ लक्ष्मीपते! कमललोचन! प्रद्युम्नको जन्म देनेवाले प्रभो! मुझे पुत्र दीजिये! पुत्र दीजिये!! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥७८॥ अपने हाथोंमें शंख, चक्र, गदा, खड्ग और शार्ङ्गधनुष धारण करनेवाले रमापते! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥७९॥

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित।८०।
राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित।८१।
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक।८२।
मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८३।
गोपिकार्जितपङ्केजमरन्दासक्तमानस।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८४।
रमाहृदयपङ्केजलोल माधव कामद।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।८५।

नारायण! रमानाथ! कमलदललोचन! देवेश्वर! कमलालया लक्ष्मीसे वन्दित श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ८०॥ राम! राघव! गोविन्द! देवकीके श्रेष्ठ पुत्र! रुक्मिणीनाथ! सर्वेश्वर! नारदादि महर्षियों तथा देवताओंसे पूजित देवकीकुमार गोविन्द! वासुदेव! जगत्पते! श्रीकान्त! गोपबालकनायक! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ८१-८२॥ मुनिवन्दित गोविन्द! रुक्मिणीवल्लभ! प्रभो! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये! मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ८३॥ गोपियोंद्वारा लाकर समर्पित किये गये कमलोंके मकरन्दमें आसक्त चित्तवाले श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये। मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ८४॥ लक्ष्मीके हृदयकमलके लिये लोलुप माधव! समस्त कामनाओंके दाता श्रीकृष्ण! मुझे मनोवांछित पुत्र प्रदान कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ८५॥

वासुदेव रमानाथ दासानां मङ्गलप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८६।
कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८७।
पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८८।
पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।८९।
दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।९०।
पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम्।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्रलाभप्रदायिनम्।९१।

अपने सेवकोंके लिये मंगलदायक रमानाथ! वासुदेव! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥८६॥ कल्याणप्रद गोविन्द! मुनिवन्दित मुरशत्रु श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥८७॥ पुत्रदाता मुकुन्द! ईश्वर! रुक्मिणीवल्लभ प्रभो! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥८८॥ पुण्डरीकाक्ष! गोविन्द! वासुदेव! जगदीश्वर! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥८९॥ दयानिधे! वासुदेव! मुनिवन्दित मुकुन्द! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥९०॥ पुत्र और सम्पत्तिके दाता, पुत्रलाभदायक, देवपूजित गोविन्द श्रीकृष्णकी हम सदा वन्दना करते हैं॥९१॥

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये।
नमस्ते पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो।९२।

नमस्तस्मै रमेशाय रुक्मिणीवल्लभाय ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक।९३।

नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रङ्गशायिने।९४।

रङ्गशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक।९५।

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते।९६।

प्रभो! आप करुणाके सागर, गोपियोंके प्राणवल्लभ और मुर नामक दैत्यके शत्रु हैं, पुत्रकी प्राप्तिके लिये आपको मेरा नमस्कार है, मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ९२॥ लक्ष्मीके स्वामी तथा रुक्मिणीके प्राणवल्लभ! आप भगवान् श्रीकृष्णको नमस्कार है। गोपबालकोंके नायक श्रीकान्त! मुझे पुत्र दीजिये॥ ९३॥

सदा ही श्रीजीकी कामना रखनेवाले आप वासुदेवको नमस्कार है। आप पुत्रदायक, नागराज शेषकी शय्यापर शयन करनेवाले तथा श्रीरंगक्षेत्रमें सोनेवाले हैं, आपको नमस्कार है॥ ९४॥ रंगशायी रमानाथ! मंगलदायक माधव! गोपबालकनायक श्रीपते! मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ९५॥ दीनोंके लिये कल्पवृक्षस्वरूप रघुनन्दन! मुझ दासको पुत्र दीजिये। रमापते! पुत्र दीजिये! पुत्र दीजिये!! पुत्र दीजिये!!!॥ ९६॥

यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः। ९७ ।
मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः। ९८ ।
नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित। ९९ ।
यः पठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत्।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च।१००।
जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम्।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः।१०१।

॥ इति सन्तानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

सदा मनोवांछित पुत्र देनेमें तत्पर रहनेवाले यशोदानन्दन श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरणमें आया हूँ, मुझे पुत्र प्रदान कीजिये॥ ९७॥

मेरे इष्टदेव गोविन्द! वासुदेव! जनार्दन! श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ॥ ९८॥ भगवन्! इन्द्रपूजित वासुदेव! आपकी कृपासे नीतिज्ञ, धनवान् और विद्वान् पुत्र उत्पन्न होता है॥ ९९॥ जो श्रीवासुदेवकथित पुत्रशतकका पाठ करता है, वह भी उत्तम पुत्रसे सम्पन्न होता है। यह स्तोत्ररत्न सुखकी भी प्राप्ति करानेवाला है॥ १००॥ जो प्रतिदिन जपके समय इसका पाठ करता है, उसे तत्काल पुत्रलाभ होता है तथा वह शीघ्र ही धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य एवं राजसम्मान प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है॥ १०१॥

॥ इस प्रकार संतानगोपालस्तोत्र पूर्ण हुआ॥

षष्ठीदेवीस्तोत्र

वात्सल्यमयी भगवती षष्ठीदेवी शिशुओंकी अधिष्ठात्री हैं। पुत्रहीनको सत्पुत्र देना, संतानको दीर्घायु बनाना तथा उसकी रक्षा करना भगवती षष्ठीका स्वाभाविक गुण है। मूलप्रकृतिके छठे अंशसे प्रकट होनेसे इनका षष्ठी नाम पड़ा है। ये ब्रह्माजीकी मानसपुत्री एवं शिव-पार्वतीके पुत्र स्कन्द [कार्तिकेय]-की प्राणप्रिया हैं, देवसेना के नामसे भी ये विख्यात हैं। इन्हें विष्णुमाया तथा बालदा (पुत्र देनेवाली) कहा गया है। भगवती षष्ठीदेवी अपने योगके प्रभावसे शिशुओंके पास सदैव वृद्धामाताके रूपमें अप्रत्यक्षरूपसे विद्यमान रहती हैं तथा उनकी रक्षा एवं भरण-पोषण करती हैं। बालकोंको स्वप्नमें कभी खिलाती हैं, कभी हँसाती हैं, कभी रुलाती हैं और कभी दुलारती हैं। इस प्रकार अभूतपूर्व वात्सल्य प्रदान करती हैं।*

स्वायंभुव मनुके पुत्र राजा प्रियव्रत थे। उनके कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यपजीने उनसे पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाया, फलतः रानी मालिनीने एक पुत्रको जन्म दिया, किंतु दुर्दैववश वह मरा हुआ था। राजा-रानी मरे पुत्रको देखकर महान् शोकमें डूब गये। पुत्रशोकसे उनका ज्ञानयोग (विवेक) जाता रहा। मंत्रियोंके बहुत समझानेपर अन्तमें राजा पुत्रको लेकर श्मशान पहुँचे। इसी समय उन्होंने देखा कि स्फटिकमणिके समान एक दिव्य विमान अन्तरिक्षसे उतर रहा है और उस विमानमें श्वेत

---

* पुत्र-प्राप्तिके अनन्तर छठे दिन षष्ठी-महोत्सव-संस्कार होता है, उसमें इन्हीं भगवती षष्ठीकी विशेष आराधना की जाती है।

चम्पा पुष्पके समान एक देवी विराजमान हैं। देवीको अपने सामने उपस्थित देखकर राजाने हाथ जोड़ते हुए उनसे पूछा—हे देवि! आप कौन हैं? तब देवीने बताया कि मैं ब्रह्माजीकी मानसी पुत्री षष्ठी (देवसेना) हूँ। मैं आप-जैसे पुण्यात्माकी इस स्थितिको देखकर यहाँ आयी हूँ। मैं अपुत्रको पुत्र देनेवाली, भार्याभिलाषीको प्रिय पत्नी देनेवाली, निर्धनोंको धन देनेवाली तथा कर्म करनेवालोंको उनके कर्मका फल देनेवाली हूँ—

अपुत्राय पुत्रदाहं प्रियादात्री प्रियाय च।
धनदाऽहं दरिद्रेभ्यः कर्मिभ्यश्च स्वकर्मदा॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्र०खं० अ० ४३)

राजन्! सुख, दुःख, भय, शोक, हर्ष, मंगल, सम्पत्ति और विपत्ति—ये सब कर्मके अनुसार होते हैं। अपने ही कर्मके प्रभावसे पुरुष अनेक पुत्रोंका पिता होता है और कुछ लोग पुत्रहीन भी होते हैं। किसीको मरा हुआ पुत्र होता है और किसीको दीर्घजीवी—यह कर्मका ही फल है। कर्म सबसे बलवान् है। इसलिये शोकका परित्याग कर सत्कर्मपरायण होना चाहिये। राजन्! मेरा दर्शन अमोघ है। यह बालक जैसे आप पति-पत्नीको प्रिय है, वैसे ही मुझे भी प्रिय है, इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है। ऐसा कहते हुए उन देवीने बालकको उठाकर गोदमें रख लिया और अपनी कृपाशक्तिसे खेल-खेलमें ही उसे जिला दिया। वात्सल्यमूर्ति देवीकी गोदमें बालक मुस्कराते हुए उछलने लगा। यह देखकर राजाको अपार हर्ष हुआ।

देवीने राजासे कहा—'राजन्! तुम्हारा यह पुत्र सभी गुणोंसे युक्त, त्रिकालद्रष्टा तथा योगियों-तपस्वियोंमें भी सिद्ध पुरुष

होगा। इसका नाम सुव्रत होगा। इसे पूर्वजन्मकी सभी बातें याद रहेंगी।' इतना कहकर देवी उस पुत्रको लेकर आकाशमें जानेके लिये उद्यत हुईं तो राजाने देवीकी प्रार्थना की, इसपर वे बोलीं—'राजन्! तुम मेरी सर्वत्र पूजा कराओ और स्वयं भी करो।' राजाद्वारा सहर्ष स्वीकृति देनेपर देवीने वह पुत्र राजाको सौंप दिया। देवीके आदेशसे राजा और प्रजाद्वारा षष्ठीदेवीका भव्य पूजन प्रारम्भ किया गया।

इस प्रकार षष्ठीदेवी अत्यन्त कृपालु और दयालु हैं, उनकी कृपासे अपुत्रको पुत्र प्राप्त हो जाता है और मृतवत्साका पुत्र जीवित हो जाता है। अतः संतानप्राप्तिके लिये षष्ठीदेवीकी आराधना, उनके मंत्रका जप तथा उनके स्तोत्रका पाठ करना चाहिये।

संतानकामीको चाहिये कि वह शालग्राम शिला, कलश, वटवृक्षके मूलमें अथवा दीवारपर लाल चन्दनसे देवी षष्ठीकी आकृति बनाकर उनका पूजन करे। सर्वप्रथम देवीका इस प्रकार ध्यान करे—

षष्ठांशां प्रकृतेः शुद्धां सुप्रतिष्ठाञ्च सुव्रताम्।
सुपुत्रदां च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसूम्॥
श्वेतचम्पकवर्णाभां रत्नभूषणभूषिताम्।
पवित्ररूपां परमां देवसेनां परां भजे॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्र॰खं॰ ४३। ४९-५०)

अर्थात् मूलप्रकृतिके छठें अंशसे प्रादुर्भूत, शुद्धस्वरूप-वाली, भलीभाँति प्रतिष्ठित, उत्तमव्रतोंसे सम्पन्न, श्रेष्ठ पुत्र देनेवाली, कल्याण प्रदान करनेवाली एवं दयाकी प्रतिमूर्ति ये देवी जगत्को उत्पन्न करनेवाली अर्थात् जगत्की माता हैं। श्वेत चम्पक पुष्पके समान इनका वर्ण है तथा ये रत्नमय आभूषणोंसे विभूषित और पवित्रात्मा हैं। मैं ऐसी परम-

चित्स्वरूपिणी भगवती देवसेना (देवी षष्ठी)-का ध्यान करता हूँ।

ध्यानके अनन्तर '**ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा**' इस अष्टाक्षर मंत्रसे आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्राभूषण, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्यादि उपचारोंसे देवीका पूजन करना चाहिये तथा देवीके अष्टाक्षर मंत्रका यथाशक्ति जप करना चाहिये।*

इस प्रकार भक्तिपूर्वक पूजन एवं जपके अनन्तर देवीके इस स्तोत्रका अत्यन्त भावपूर्वक पाठ करना चाहिये। यह स्तोत्र संतानकी प्राप्ति करानेवाला है—

स्तोत्र

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।

देवीको नमस्कार है। महादेवीको नमस्कार है। भगवती सिद्धि एवं शान्तिको नमस्कार है। शुभा, देवसेना एवं भगवती षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। वरदान देनेवाली, पुत्र देनेवाली, धन देनेवाली, सुख प्रदान करनेवाली एवं मोक्षदाता भगवती षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। मूलप्रकृतिके छठे अंशसे प्रकट शक्तिस्वरूपा भगवती सिद्धाको नमस्कार है।

* पुनर्ध्यात्वा च मूलेन पूजयेत् सुव्रतां सतीम्। पाद्यार्घ्याचमनीयैश्च गन्धपुष्पप्रदीपकैः॥
नैवेद्यैर्विविधैश्चापि फलेन शोभनेन च। ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहेति विधिपूर्वकम्॥
अष्टाक्षरं महामंत्रं यथाशक्ति जपेन्नरः। (ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्र०ख० ५१—५३)

मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥
पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
सारायै शारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम् ॥
बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ॥
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु ॥
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा ॥
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि ॥

माया, सिद्धयोगिनी, स्वयंमुक्त एवं मुक्तिदात्री, सारा, शारदा और परादेवी नामसे शोभा पानेवाली भगवती षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। बालकोंकी अधिष्ठात्री, कल्याणदात्री, कल्याणस्वरूपिणी एवं कर्मोंका फल प्रदान करनेवाली देवी षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। अपने भक्तोंको प्रत्यक्ष दर्शन देनेवाली तथा सबके लिये सम्पूर्ण कार्योंमें पूजा प्राप्त करनेकी अधिकारिणी स्वामी कार्तिकेयकी प्राणप्रिया देवी षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। मनुष्य जिनकी नित्य वन्दना करते हैं और देवताओंकी रक्षामें जो तत्पर रहती हैं, उन शुद्धसत्त्वस्वरूपा देवी षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। हिंसा और क्रोधसे रहित देवी षष्ठीको बार-बार नमस्कार है। हे सुरेश्वरि! आप मुझे धन दें, प्रिय पत्नी दें, पुत्र देनेकी कृपा करें।

धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते॥
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्र०ख० ४३।५७—६६)

मुझे धर्म दें, यश दें, हे षष्ठीदेवि! आपको बार-बार नमस्कार है। हे सुपूजिते! आप मुझे भूमि दें, प्रजा दें, विद्या दें तथा कल्याण एवं जय प्रदान करें। हे षष्ठीदेवि! आपको बार-बार नमस्कार है।

इस स्तोत्रकी महिमामें कहा गया है कि—जो निःसंतान व्यक्ति षष्ठीदेवीके इस स्तोत्रको निरन्तर एक वर्षतक सुनते (पाठ करते) हैं, उन्हें श्रेष्ठ और दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त होता है। जो महावंध्या (बाँझ नारी) एक वर्षतक देवसेनाकी भक्तिके साथ पूजा करके इस स्तोत्रको सुनती है, वह सब पापोंसे छूट जाती है और महावंध्या होनेपर भी षष्ठीदेवीके प्रसादसे वीर, गुणी, विद्वान्, यशस्वी, दीर्घायुसम्पन्न पुत्र उत्पन्न करती है। जो नारी काकवंध्या हो (जिसे केवल एक संतान उत्पन्न हो) और जिस स्त्रीके पुत्र पैदा होकर मर जाते हों, वह यदि इस स्तोत्रको एक वर्षतक लगातार सुनती रहे तो षष्ठीदेवीके अनुग्रहसे पुत्रवती हो जाती है। बालकके रोगी होनेपर, यदि उसके माता-पिता इस स्तोत्रको सुनें तो षष्ठीदेवीकी कृपासे एक महीनेके भीतर ही बालक रोगमुक्त हो जाता है*।

---

* षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मन् यः शृणोति तु वत्सरम्। अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीविनम्॥
वर्षमेकं च यो भक्त्या सम्पूज्येदं शृणोति च। सर्वपापाद्विनिर्मुक्ता महावंध्या प्रसूयते॥
वीरं पुत्रं च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम्। सुचिरायुष्यवन्तं च सूते देवीप्रसादतः॥
काकवंध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत्। वर्षं श्रुत्वा लभेत् पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः॥
रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति चेत्। मासेन मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः॥
(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्र०ख० ४३।५७—६६)

॥ श्रीहरिः ॥

नित्यपाठ साधन-भजन एव कर्मकाण्ड-हेतु

कोड	पुस्तक
592	**नित्यकर्म-पूजाप्रकाश** [गुजराती, तेलुगु भी]
1593	**अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश**
1895	**जीवच्छ्राद्ध-पद्धति**
1809	**गया श्राद्ध-पद्धति**
1928	**त्रिपिण्डी श्राद्ध-पद्धति**
1416	**गरुडपुराण-सारोद्धार** (सानुवाद)
1627	**रुद्राष्टाध्यायी**-सानुवाद
1417	**शिवस्तोत्ररत्नाकर**
1774	**देवीस्तोत्ररत्नाकर**
1623	**ललितासहस्रनामस्तोत्रम्**- [तेलुगु भी]
610	**व्रत-परिचय**
1162	**एकादशी-व्रतका माहात्म्य**— मोटा टाइप [गुजराती भी]
1136	**वैशाख-कार्तिक-माघमास-माहात्म्य**
1588	**माघमासका माहात्म्य**
1899	**श्रावणमासका माहात्म्य**
1367	**श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा**
052	**स्तोत्ररत्नावली**—सानुवाद [तेलुगु, बँगला भी]
1629	,, ,, सजिल्द
1567	**दुर्गासप्तशती**— मूल, मोटा (बेड़िया)
876	,, मूल गुटका
1727	,, मूल, लघु आकार
1346	,, सानुवाद मोटा टाइप
118	,, सानुवाद [गुजराती, बँगला, ओड़िआ भी]
489	,, सानुवाद, सजिल्द [गुजराती भी]

कोड	पुस्तक
1281	**दुर्गासप्तशती** (विशिष्ट सं०)
866	,, केवल हिन्दी
1161	,, केवल हिन्दी मोटा टाइप, सजिल्द
819	**श्रीविष्णुसहस्रनाम**-शांकरभाष्य
206	**श्रीविष्णुसहस्रनाम**—सटीक
226	**श्रीविष्णुसहस्रनाम**—मूल, [मलयालम, तेलुगु, कन्नड, तमिल, गुजराती भी]
1872	**श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्** -लघु
509	**सूक्ति-सुधाकर**
1801	**श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्** (हिन्दी-अनुवादसहित)
207	**रामस्तवराज**—(सटीक)
211	**आदित्यहृदयस्तोत्रम्**— हिन्दी-अंग्रेजी-अनुवादसहित [ओड़िआ भी]
224	**श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र** [तेलुगु, ओड़िआ भी]
231	**रामरक्षास्तोत्रम्**— [तेलुगु, ओड़िआ, अंग्रेजी भी]
1594	**सहस्रनामस्तोत्रसंग्रह**
1850	**शतनामस्तोत्रसंग्रह**
715	**महामन्त्रराजस्तोत्रम्**

नामावलिसहितम्

कोड	पुस्तक
1599	**श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रम्** (गुजराती भी)
1600	**श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रम्**
1601	**श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम्**
1663	**श्रीगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्**
1664	**श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम्**
1665	**श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्रम्**

कोड	पुस्तक
1706	**श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्**
1704	**श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रम्**
1705	**श्रीरामसहस्रनामस्तोत्रम्**
1707	**श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम्**
1708	**श्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम्**
1709	**श्रीगंगासहस्रनामस्तोत्रम्**
1862	**श्रीगोपाल स०**–सटीक
1748	**संतान-गोपालस्तोत्र**
563	**शिवमहिम्नःस्तोत्र** [तेलुगु भी]
230	**अमोघ शिवकवच**
495	**दत्तात्रेय-वज्रकवच** सानुवाद [तेलुगु, मराठी भी]
229	**श्रीनारायणकवच** [ओड़िआ, तेलुगु भी]
1885	**वैदिक-सूक्त-संग्रह**
054	**भजन-संग्रह**
1849	**भजन-सुधा**
140	**श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली**
144	**भजनामृत**
142	**चेतावनी-पद-संग्रह**
1355	**सचित्र-स्तुति-संग्रह**
1800	**पंचदेव-अथर्वशीर्ष-संग्रह**
1214	**मानस-स्तुति-संग्रह**
1092	**भागवत-स्तुति-संग्रह**
1344	**सचित्र-आरती-संग्रह**
1591	**आरती-संग्रह**—मोटा टाइप
153	**आरती-संग्रह**
1845	**प्रमुख आरतियाँ**–पॉकेट
208	**सीतारामभजन**
221	**हरेरामभजन**— दो माला (गुटका)
222	**हरेरामभजन**—१४ माला
225	**गजेन्द्रमोक्ष**–सानुवाद, [तेलुगु, कन्नड़, ओड़िआ भी]

कोड	पुस्तक
385	**नारद-भक्ति-सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति-सूत्र,** सानुवाद [बँगला, तमिल भी]
1505	**भीष्मस्तवराज**
699	**गङ्गालहरी**
1094	**हनुमानचालीसा**— हिन्दी भावार्थसहित
1917	,, मूल (रंगीन) वि०सं०
227	,, (पॉकेट साइज) [गुजराती, असमिया, तमिल, बँगला, तेलुगु, कन्नड, ओड़िआ भी]
695	**हनुमानचालीसा**—(लघु आकार) [गुजराती, अंग्रेजी, ओड़िआ, बँगला भी]
1525	**हनुमानचालीसा**—अति लघु आकार [गुजराती भी]
228	**शिवचालीसा**—असमिया भी
1185	**शिवचालीसा**–लघु आकार
851	**दुर्गाचालीसा, विन्ध्येश्वरीचालीसा**
1033	,, लघु आकार
232	**श्रीरामगीता**
383	**भगवान् कृष्णकी कृपा तथा दिव्य प्रेमकी....**
203	**अपरोक्षानुभूति**
139	**नित्यकर्म-प्रयोग**
524	**ब्रह्मचर्य और संध्या-गायत्री**
236	**साधक-दैनन्दिनी**
1471	**संध्या, संध्या-गायत्रीका महत्त्व और ब्रह्मचर्य**
210	**सन्ध्योपासनविधि एवं तर्पण-बलिवैश्वदेवविधि**— मन्त्रानुवादसहित [तेलुगु भी]
614	**सन्ध्या**